बरेली, शुक्रवार
17 अप्रैल, 2026
नगर संस्करण
पृष्ठ 7.80
कुल 18+4=22

दैनिक जागरण

दो भाई पड़ोसी में तब्दील किए जिसने...

जास., बरेली: एसआरएमएस रिद्धिमा के सभागार में गुरुवार को मुशायरा बज्म-ए-सुखन आयोजित हुआ। इसमें शायरों ने अपनी नज्मों से श्रोताओं की वाहवाही हासिल की। बरेली के शायर मुहम्मद शमसुद्दीन शम्स ने 'दो भाई पड़ोसी में तब्दील किए जिसने, आंगन की मुझे अब वो दीवार गिराना है' और 'खाई है कसम मैंने है जिस्म में जो जब तक, रोतों को हंसाना है गिरतों को उठाना है' सुनाकर तालियां बटोरीं।

रिद्धिमा में आयोजित मुशायरा में मौजूद शायर • सौ. आयोजक

शायर इस्तखार अहमद नाजुक ने अपना कलाम 'यूं ही अपना मिलाप थोड़ी है, यह कहानी लिखी हुई होगी' सुनाया। शायर कामिल हुसैन रिजवी ने 'कैद करने के भी हकदार नहीं हैं वो लोग, रहम खाने को भी तैयार नहीं हैं वो लोग' और 'रास्ता रोकेंगे फिर भी मुझे जाने देंगे, दोस्त हैं आहनी दीवार नहीं हैं वो लोग' सुनाकर श्रोताओं की तालियां हासिल कीं। बदायूं के शायर डा. सैयद इमरान अली रिजवी ने 'कोई समझे तो बात का मतलब, बात मतलब की सब समझते हैं' सुनाया। अलीगढ़ की शायरा तस्लीम बानो ने अपना कलाम 'खौफे तन्हाई में आकर किसी के हो जाते हैं, लोग इतने तन्हा हैं कि सभी के हो जाते हैं' और 'हम किसी के हो नहीं सकते हमें लगता है ये, जो बदलता है कोई हम उसी के हो जाते हैं' पढ़ा। सरवत परवेज ने 'अपनी दुनिया तमाम कर बैठे, जिंदगी तेरे नाम कर बैठे, जो मिला वो मेरा मुकद्दर था, फैसला अपने नाम कर बैठे' सुनाया। संचालन फरदीन अहमद ने किया। इस मौके पर ट्रस्ट के संस्थापक देव मूर्ति, डा. प्रभाकर गुप्ता, डा. अनुज कुमार, डा. शैलेश सक्सेना, डा. रीता शर्मा मौजूद रहे।